Acknowledgement

''कृतज्ञता ज्ञापन''

पहले सिमरू मात पिता, दूजे गौरी गणेश।
तिजे सिमरू माँ सरस्वती, चौथे गुरू उपदेश।।

मेरे आदरणीय पूज्य माता–पिता, माँ शारदा, मेरे आध्यात्मिक एवं संगीत क्षेत्र के सभी वंदनीय गुरूजन, एवं मार्गदर्शक, इन सभी के सदैव ऋण में ही रहना मैं पसंद करूँगा। सभी को मेरा मनस्वी वंदन और सहृदय प्रणाम!

मेरे बचपन से ही मैं संगीत के प्रति, विशेष तौर पर तालवाद्य के प्रति आकर्षित रहा और मुझे संगीत देखने–सुनने का विशेष लगाव भी था। मेरी यहीं लगन और यहीं छंद, आगे चलकर 'तबला अध्ययन' विषय बन गया और मेरे जीवन की तबला यात्रा शुरू हुई। मेरे पिताजी सतसंगी है, वे धर्मगुरू महर्षि नवल सतसंग एवं भजन मंडल में भजन गाते थे, जिसके फलस्वरूप मुझे बचपन से ही भजन एवं संगीत में रूचि प्राप्त हुई तथा अनुभव भी मिलता गया। मेरी माताजी को भी कथ्थक नृत्य से काफी लगाव था, लेकिन तत्कालीन परिस्थिती अनुरूप नहीं थी, इसलिए उनकी ईच्छा अतृप्त रह गयी। मेरी माताजी ने उनकी ईच्छा मुझसे कहीं और कहाँ कि, 'बेटा तू संगीत कला सीख।' और माता–पिता की आज्ञा एवं आशीर्वाद से मुझे तबलावादन सीखने की प्रेरणा मिली। आज, मैं मेरे माता–पिता की उनके बेटे से रही तबलावादक बननें की मनशा को कुछ मात्रा में प्रामाणिकता से पूरी कर पा रहा हूँ, इस बात का मुझें मनःपूर्वक आनंद हो रहा है।

तबला बजाने का छंद, सीखने की जिज्ञासा और मनस्वी ईच्छा के फलीभूत मुझे मेरे संगीत के प्रथम गुरू स्व. पं. गोविंदजी माजगांवकर गुरूजी का साथ प्राप्त हुआ और मेरी तबले की शिक्षा का संस्कार शुरू हुआ। गुरूजी ने निःस्वार्थ भावना से न केवल मुझे तबला सीखाया, बल्कि मुझे पुत्रवत प्रेम कर के मानवी मूल्यों से सजग सावधान भी किया, तबले के साथ–साथ जीवन जीने की कला भी सीखायी। सचमुच, गुरूजी के मुझपर अनंत उपकार है, जो मैं कभी भी भूला नहीं सकता। पं. माजगांवकर गुरूजी से शास्त्रीय तबला सीखते समय अनेक परंपरागत रचनाएँ सीखने मिली।

गुरूमुखी विद्या प्राप्त करते हुए तबले की परीक्षाएँ भी देनी शुरू की, लेकिन जैसे–जैसे साल बीतें वैसे वैसे अभ्यास बढ़ता गया। गुरूजी, हमेशा कहते थे, 'अरे बेटा सचिन, प्रॅक्टिस कर, मेहनत बढ़ा, रियाज़ कर।', लेकिन इन शब्दों से मैं काफी दूर था, मेरे विचार भी दूर थे। गुरूजी हमेशा मुझे इस बात से अवगत कराते थे, डाँट–फटकारते भी थे। गुरूजी की डाँट, यह तो हर विद्यार्थी के लिए हमेशा आशीर्वाद ही रहती है, जिससे मुझे 'रियाज' यह शब्दरूप प्रसाद मिला और मेरी बुध्दि में प्रकाश होकर मैं इस शब्द के पीछे अभ्यासपूर्वक ध्यान देने लगा। मेरी 'तबला' अध्ययन की भूख बढ़ती गयी। गुरूजी के समवेत रियाज़ भी शुरू हुआ। इस दौरान गुरूजन–विद्वानों के खुले कार्यक्रम भी देखने का अवसर गुरूजी के सहवास से मिला, जिससे मेरे दिमाग में रियाज़ का महत्व ओंर भी बढ़ गया और मैं रियाज करने लगा। मेरे मन से यह आवाज आयी की, 'समाज पर राज करना हो तो, रियाज़ करना अनिवार्य है'। लेकिन मेरा दुर्भाग्य, की मुझे पं. माजगांवकर गुरूजी का सहवास आगे नहीं मिल पाया और गुरूजी का वर्ष 2001 में देहांत हो गया।

पं. माजगांवकर गुरूजी ने मुझे रियाज़ के प्रति जगा तो दीया था, लेकिन अब सही दिशा मिलना बाकी थी, जो मेरे सौभाग्य से मेरे गुरूवर्य पं. आमोद दंडगेजी से मिली। मेरे तबलावादन का गुणी जनोंद्वारा स्वागत हुआ। कुछ जनोंने टि़का–टिप्पणी भी की, कुछों ने सुझाव दिया, मार्गदर्शन भी किया। मेरे तबलावादन का सफर इस तरह, मुझे अब प्रशस्त होता दिखायी दिया। रियाज हेतु, मेरा केवल उचित प्रवेश हो चूका था, लेकिन सही दिशा तथा गुरू की नजर मिलनी बाकी थी। मैंने तबले का रियाज जारी रखा तथा गुरूजनों के आशीर्वाद से चिंतन भी शुरू किया। गुरूवर्य पं. आमोदजी दंडगे ने मुझे रियाज़ का मर्म एवं महत्व समझाया तथा गुरूजी के प्रत्यक्ष रियाजी वादन के सुनने से में काफी प्रभावित हुआ। इस तरह, रियाज के प्रति मेरे मन की जिज्ञासा एवं सूक्ष्मता बढ़ने लगी, चिकित्सक वृत्ति भी जागृत हुई। गुरूवर्य पं. आमोदजी से मुझे खासकर फर्रूखाबाद का तबला प्राप्त हुआ, अनेक परंपरागत बंदिशे प्राप्त हुई और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि, तबला वादन–विचार प्राप्त हुआ। वैसे तो पहले से ही मुझे विशेष तौर पर फर्रूखाबाद घराने का आकर्षण था ही और महान तबलावादक खलिफा उस्ताद अमीर हुसेन खाँ साहेब और गायनाचार्य पं. विष्णूजी पलुस्कर ये दोनों मेरे श्रध्दास्थान है। इस तरह, गुरूद्वारा तबले की नजर प्राप्त हुई।

मेरा रियाज़ एवं वादन अग्रेसर हुआ और बगैर रियाज़ के कुछ भी नहीं? यह मूलभूत सत्य मुझे समझ में आया। इसी दरम्यान, मुझे फर्रूखाबाद घराने के ज्येष्ठ तबलावादक गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकरजी का स्नेह–सहवास एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ और मेरा तबले के प्रति देखने का दृष्टिकोन और भी विशाल एवं व्यापक हुआ। मुझे तबले की साहित्य संपन्नता मिली। गुरूवर्य पं. मुलगांवकरजीने मुझे बहुत प्रेम किया, स्नेह दिया, धीरज दिया तथा मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ाया, जो सबसे महत्वपूर्ण था। इस तरह, मेरे विद्वान–गुणीजन, गुरूजनों से प्राप्त कई बंदिशे के संग्रह के बाद मुझे रियाज़ का महत्व और भी स्पष्ट हुआ और बगैर रियाज़ के उनके वादन की कल्पना भी नहीं की जा सकती? यह ज्ञात होने लगा। अच्छा तबलावादक बनने के लिए रियाज के लिए कोई भी पर्याय नहीं है तथा गुरूमुखी परंपरा को समर्थता से निभाने हेतु केवल रियाज़ करना ही अनिवार्य है, यह बात मैंने दिल में पक्की कर ली और रियाज़ सातत्यपूर्णता से करने लगा। सचमुच, एक तबलासाधक को ऐसे गुणी–विद्वान गुरूजनों का सहवास एवं मार्गदर्शन प्राप्त होना यह उस शिष्य के लिए सौभाग्य की बात होती है, जो मुझे मिली। गुरूवर्य पं. मुलगांवकरजी मुझे हमेशा, जब भी मैं उनके पास मुंबई में जाता था तो सबसे पहला सवाल करते थे? ''काय सचिन, रियाज़ सुरू आहे ना? प्रामाणिकपणे मेहनत कर, बस्स.... आणि काही नको!''

इस तरह, मुझे गुरूजनों की सर्वांगीण दृष्टि से नजर प्राप्त हुई तथा उनका आशीर्वाद भी मिला। इस तरह, मेरा रियाज़ के प्रति चिंतन बढ़ता ही गया और इसी के फलस्वरूप, एक दिन ऐसा आया, की मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि क्यों न तबले के 'रियाज' पर ही शोध कार्य किया जाए? अब तक मैंने तबला में मास्टर्स डिग्री अव्वल स्थान में आकर प्राप्त की थी, लेकिन मन की संतुष्टि अभी नहीं हुई थी। मैंने यह तय कर लिया की, अब मुझे आगे कार्य करना है और तबले का मन से अध्ययन करते हुए तबला विषय में Ph.D. करनी है। मेरी यह मन की बात, जो ही मैंने अपने गुरूजनों के सामने रखी, तो तुरंत ही उन्होंने उसकी आज्ञा दी। मेरे गुरूवर्य पं. आमोदजी को मेरा यह विचार पसंद आया और उन्होंने मुझे तबला प्रोफेसर डॉ. अजयजी अष्टपुत्रे, (बड़ोदरा) का नामनिर्देश किया। गुरूवर्य पं. आमोदजीने खुद मेरे बारे में डॉ. अष्टपुत्रेजी से बात की और मुझे मार्गदर्शन करने हेतु उन्हें अनुरोध भी किया। सचमुच, मुझे कहते हुए हर्ष होता है तथा में स्वाभिमान के साथ कहता हूँ कि, मेरे तबला Ph.D. करने का

मार्ग सुखकर बनाकर मुझे उससे लाभान्वित करने का श्रेय, मैं मेरे गुरूवर्य पं. आमोदजी को हदय से देना चाहूँगा। आज, केवल उनकी बदोलत मुझे यह सौभाग्य एवं सन्मान प्राप्त हो रहा है, जिसे मैं बड़ी नम्रता से एवं आदरभाव से यहाँ पर नमूद करता हूँ। और इस तरह, अब मेरा और डॉ. अजय अष्टपुत्रे जी का सुसंवाद एवं संपर्क का सिलसिला शुरू हुआ। मेरी Ph.D. की मनशा, मेरे गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकरजी को भी बहुत पसंद आयी, तथा उन्होंने मुझे इस बात के लिए पूर्ण रूप से आशीर्वाद भी दिया। गुरूवर्य, पं. मुलगांवकरजी हमेशा मुझसे कहते थे, ''सचिन, तुझं Ph.D. च काम कुठं पर्यंत आलं? छान कर व जे काही करशील ते मनापासून व अभ्यासपूर्ण कर।'' लेकिन, मेरा और एक दुर्भाग्य यह है की, आज मेरे गुरूवर्य पं. मुलगांवकरजी नहीं रहें, उनका वर्ष 2018 में स्वर्गवास हुआ। आज, वह होते तो इस बात की सबसे ज्यादा खुशी उन्हें होती, यह मैं जानता हूँ। लेकिन, उनका प्रेमपूर्वक दिया हुआ आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ है। मैं कृतज्ञतापूर्वक मेरा यह Ph.D शोधप्रबंध गुरूजी के पवित्र चरणों पे रखकर उन्हें मनस्वी वंदन करता हूँ। आज, मै जो भी कुछ हूँ, वह केवल मेरे इन सभी गुरूजनों के शुभ आशीर्वाद से ही हूँ और कुछ नहीं, यह मेरी प्रामाणिक भावना है।

गुरूजनों के आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं को साथ लेकर मैं डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से संपर्क कर के बड़ोदरा (गुजरात) में आया। मेरा और एक परमभाग्य की वे मुझे तबला मार्गदर्शक गुरू के रूप में मिले। डॉ. अष्टपुत्रे जी ने मुझे बड़ोदरा बुलाया और सयाजीराव विश्वविद्यालय में मेरा Ph.D. का रजिस्ट्रेशन करा दिया। इसके पहले मैंने, बड़ोदरा में PET परीक्षा दी थी, जिसमे मैं उत्तीर्ण हुआ तभी से मेरा डॉ. अष्टपुत्रेजी से संपर्क–संवाद चल रहा था, उन्होंने यथा समय मुझे मार्गदर्शन किया और Ph.D. के रजिस्ट्रेशन की प्रोसेस से अच्छी तरह से अवगत कराया। दि. 30 दिसंबर 2017 के रोज मेरा तबला Ph.D. का रजिस्ट्रेशन हुआ और अब शुरू हुआ तबले के रियाज़पर शोध के कार्य का सुखद सिलसिला.....! मेरा यह परमभाग्य मैं समझता हूँ की, मुझे बड़ोदरा में सयाजीराव विश्वविद्यालय में Ph.D. करने का सुअवसर प्राप्त हुँआ।

मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजय अष्टपुत्रेजीने मुझे Ph.D. शोधप्रबंध की संपूर्ण जानकारी अध्यायों के माध्यम से देना शुरू की, संपूर्ण प्रक्रिया से मुझे अवगत कराया, साथ ही अपने ज्ञान से मुझे लाभान्वित किया। मेरे मार्गदर्शक गुरू केवल मार्गदर्शक न रहते हुए उन्होंने मेरे Ph.D. की संपूर्ण जिम्मेदारी खुद अपने कंधो पर ली और मुझे पूर्ण रूप से

सहयोग दिया। इस दरम्यान, मुझे डॉ. अष्टपुत्रेजी ने राष्ट्रीय एवं आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मैं सहभाग दिलवाया, जिसमें मैंने उनके मार्गदर्शन में कई शोधपत्र भी सम्मिलित किए। यह भी मुझे अनुभव प्राप्त हुआ। इस प्रकार से, कई संगोष्ठी एवं कार्यशाला में सहभागी होने के साथही बड़े–बड़े विद्वान कलाकारों का समीपता से सहवास मिला, जिससे मेरा ज्ञान और भी बढ़ने लगा और इस बात का पूरा श्रेय मे मेरे मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी को देना चाहूँगा। इन सभी बातों का सबसे बड़ा लाभ मुझे यह हुआ की, मेरे रियाज़ विषय के शोधप्रबंध मे, मैं इन सबका उल्लेख कर पाया, इस तरह मेरे ज्ञान में और भी बढ़ोतरी हुई तथा में लाभान्वित होने लगा। मेरे मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजयजी, यह प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना साहब के शागीर्द है, जो अजराड़ा घराने के महान तबलावादक एवं गुरू थे। वैसे तो मेरा ज्यादातर संबंध फर्रूखाबाद घराने से रहा था, लेकिन अब मुझे डॉ. अजयजी के रूप में अजराड़े का महत्वपूर्ण वादन विचार मिलने लगा, जो मेरे लिए नवीनता थी। इस तरह, मैंनें मनस्वी डॉ. अजयजी को केवल मार्गदर्शक गुरू (Guide) के रूप में न देखते हुए, मेरे तबला गुरू के रूप में अपना लिया। उन्होने यथा समय अपने विचारों से मेरे ज्ञान को अग्रेसर बनाया, मुझे लाभान्वित भी किया। उन्होंने तबला विषय हेतु, मुझे हर ग्रंथ लायब्ररी द्वारा सहज उपलब्ध कराए, जिससे मेरा शोधप्रबंध और भी मौलिक (Rich) होने लगा। मैं सयाजीराव विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के सभी लायब्ररी स्टाफ को मनःपूर्वक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे यथा समय अपना पूर्ण सहयोग दिया। साथ ही, डॉ. अष्टपुत्रेजी ने संगीत विभाग के अन्य मान्यवर अध्यापकों से मेरी भेट करवा कर, उनके ज्ञान से भी मुझे लाभान्वित किया।

यहाँ पर एक मन की बात कहना चाहूँगा, हर मार्गदर्शक (Guide) केवल शोधार्थी के प्रबंध हेतु जिम्मेदारी लेता है और वो उसे पूरी भी करता है, लेकिन मेरे मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजयजी ने सच कहता हूँ, मेरे संपूर्ण जीवन की जिम्मेदारी अपने कंधोपर ले ली थी। उन्होंने बड़ोदरा मे मुझे कभी भी कोई बात की कमी नहीं पड़ने दी, सारी बातों की पूर्तता की और शोध प्रबंध कार्य हेतु मुझमे एक प्रकार की ऊर्जा, प्रेरणा, उत्साह और चेतना भर दी थी। मेरे मार्गदर्शक गुरू की यह उमंग, यह कष्ट साध्य कोशिश से मानों मुझे नवचेतना मिली और मैं अपने शोधकार्य में हमेशा अग्रेसर रहा। क्या कहूँ? डॉ. अजयजी ने सचमुच मेरे माता–पिता के रूप में खड़े होकर मुझे कभी भी कोई बात की

कमी महसूस नही होने दी। एक सच्चे गुरू की यहीं तो पहचान होती है। उस दिन से मैंने मन में ठान लिया की, अब मैं मेरी Ph.D. केवल उपाधि प्राप्त करने हेतु न करते हुए मेरे मार्गदर्शक गुरू के लिए, केवल उनके प्रयासों को सफल करने हेतु और उन्हें वह सच्चे दिल से समर्पण करने हेतु करूँगा और गुरूजनों एवं परमेश्वर के आशीर्वाद से यह मेरी मनशा अब साकार रूप हो रही, इसका मुझे आनंद हो रहा है। सचमुच, आज मेरा यें मान–सन्मान जो भी कुछ है, इसका पूर्णरूपेण श्रेय मे मेरे मार्गदर्शक तबला गुरू प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी को सह्दय देना पसंद करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करूँगा की, ऐसे गुरू सभी साधको को मिले और साथ ही सदैव उनके निरोगता एवं स्वस्थता का चिंतन करूँगा।

मात–पिता एवं गुरूजनों के आशीर्वाद के बगैर तबले के प्रति चल रहा यह मेरा सेवा कार्य पूर्णरूप नहीं ले पाता। साथ ही मेरे कई मित्रगण, शुभचिंतक, गुरूभाई–बहन इन सभी की शुभकामनाएँ एवं शुभआशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहे और मेरे कार्य को सफल बना दीया। मेरे परिवार से मिला अनमोल साथ मैं कैसे भूल सकता हूँ? मेरे बडे और छोटे भाई ने तथा मेरी प्यारी छोटी बहना मिनाक्षी ने मुझे हमेशा हौंसला दिया। मेरे स्व. नाना बापूजी ने भी मेरे हौसले बुलंद किये। मेरे बड़े भाई श्री. उमेश भैय्या और साथ ही श्री. शशिकांत भैय्या, जिनकी तबीयत की कमजोरी के बावजूद भी उन्होंने मुझे सहयोग दिया और मेरी सभी प्रकार की मदद भी की, इन दोनों भाईयों को मैं धन्यवाद देता हूँ। हर सफल आदमी के यश के पीछे उसकी पत्नी का साथ रहता है, एक पत्नी हमेशा अपने पति के पिछे साएँ की भाँति खड़ी रहती है। ठीक उसी तरह, मेरी पत्नी सौभाग्यवती नीता ने मुझे सर्वोपरि सहायता दी और मेरा आत्मविश्वास यथासमय बढ़ाया, जो सबसे महत्वपूर्ण था। सच कहता हूँ, मेरी इस सरस्वती साधना में मेरी पत्नी ने लक्ष्मी रूप में मेरा पूर्णरूप साथ दिया। मेरे दो पुत्र रत्न चि. पार्थ और चि. गोरक्ष ने मुझे छोटी छोट़ी लेकिन महत्वपूर्ण मदद की, मुझे प्यार और स्नेह दिया और मुझे एक प्रकार का आनंद–उत्साह दिया। मेरे संपूर्ण कचोट़े परिवार का स्नेह, प्यार एवं साथ मै कभी भी भूला नहीं सकता, उनकी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद, बड़े–छोट़ो का प्यार–आशीर्वाद मेरे साथ हमेशा बना रहा है। मेरे संगीत कला के अन्य गुरूजनों में गुरूतुल्य बुजुर्ग तबलावादक पं. महेश पाटील गुरूजी, इचलकरंजी और गुरूतुल्य बुजुर्ग ढ़ोलकीवादक श्री. गौतम कांबले, कोल्हापूर इन विभूतियों का नाम मैं उसी आदरभाव से

लूँगा, जिन्होंने मुझे सर्वोपरि सहायता की और आशीर्वाद प्रदान किया तथा अनमोल मार्गदर्शन भी किया। वैसे तो मेरे सभी शिष्य मुझे बहुत प्यार करते है और मैं भी उन्हें उतना ही स्नेह करता हूँ, मेरी शुभकामनाएँ हमेशा उनके साथ है। फिर भी, विशेष रूपसे मेरे जेठे शिष्य श्री. अमोल राबाड़े, कोल्हापुर (सं. विशारद) ने मुझे पितृवत प्रेम कर के मुझे यथासमय मदद की तथा पोषक बातों की पूर्ण रूप से पूर्तता भी की, आज मेरा और अमोल का रिश्ता यह एक आपसी भावनिक ड़ोर बन चूँकि है, जो अटूट है। उसी प्रकार, मेरे एक जेठे स्नेही मित्र एवं शिष्य श्री. रविंद्रजी जांबोटकर (बुर्जुग संगीत साधक), कोल्हापुर ने मुझे मेरे संपूर्ण Ph.D. के कार्यकाल में कागज़ों की पूर्ण रूप से पूर्तता की और सहाय्यता भी की। मेरे और एक शिष्य श्री. राहूल भोसले (सं. विशारद) ने पैरों से अपाहिज़ होने के बावजूद भी तबले की सभी बंदिशो कों लिपीबध्द रूपसे टाईप करके मेरा काम और भी आसान कर दिया। सचमुच, इन सभी ने की हुई मद़द को मैं भूल नही सकता। मेरे प्रबंध का डी.टी.पी., पेज् सेटअप और प्रबंध बांधणी आदि सभी काम रेखीवता से अत्यंत योग्य तरीके से पूर्ण करने में मेरे मित्र डॉ. दिनकर कबीर (कोल्हापुर) सर इनका अनमोल सहकार्य रहा, उन्होंने पूरी जिम्मेदारी से बहुत ही सही रूप से मेरा प्रबंध पूर्ण किया और उसे योग्य रूपसे पूर्णत्व प्रदान किया। मैं व्यक्तिशः इन सभीका ह्दयसे आभार मानता हूँ।

मेरे मार्गदर्शक तबलागुरू डॉ. अजयजी अष्टपुत्रेजी इनके बदोलत बड़ोदरा शहर में जिन–जिन व्यक्तियों से मेरा परिचय हुआ उन सभी का मुझे सहयोग प्राप्त हुआ, लेकिन इन व्यक्ति विशेषों में तबलावादक श्री. नंदकिशोर दादा दातेजी ने मुझे छोटे़ भाई समान प्रेम दिया और बड़ोदरा में मुझे कभी भी कोई बात की कमी नही पड़ने दी। उन्होंने मेरे रहने की व्यवस्था अपने घर में ही कर दी और मुझे हर प्रकार की सुविधा प्राप्त करा दी। उनके माताजी और पिताजी, जो ज्येष्ठ तबलागुरू है– पं. प्रभाकर दाते जी इन्होंने भी मुझे पुत्रवत प्रेम किया और मार्गदर्शन भी किया। मैं पूरे दाते परिवार का आजन्म ऋणी रहना पसंद करूँगा, जिनसे मुझे हर प्रकार का सहयोग और स्नेह मिला। मैं बड़ोदा ब्राम्हण सभा के आदरणीय श्री. गर्गे काका इनको भी साभार वंदन करता हूँ, जिन्होंने मेरी यथा समय रहने – ठहरने की व्यवस्था में सहयोग दीया। सचमुच, इन सभी व्यक्ति विशेषों के सहयोग के बगैर मेरा Ph.D. हेतु यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता, वह केवल असंभव ही बन जाता। आज, तबले की Ph.D. हेतु यह सेवा का मौका मुझे

मिला है, यह केवल इन सभीं के शुभकामनाएँ और आशीर्वाद से ही है, यह मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहूँगा।

तबला Ph.D. शोधप्रबंध हेतु, मुझे कई गुरूजन, गुणीजन एवं विद्वान कलाकारों का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार लेने का सुअवसर मिला। इन सभी विद्वान–गुरूजनोंने अपने ज्ञान से मुझे लाभान्वित किया और अनमोल मार्गदर्शन कर के मेरा शोधकार्य और भी अग्रेसर बना दिया एवं मुझे योग्य दिशा भी दी। मैं इन सभी कलाकारों का ऋणी रहूँगा, जिनमें आदरणीय गुरूवर्य पं. अरविंदजी मुलगांवकर (मुंबई), गुरूवर्य पं. आमोदजी दंडगे (कोल्हापूर), पं. सुधीर माईणकर (मुंबई), आचार्य गिरीश्चंद्रजी श्रीवास्तव (इलाहाबाद), पं. ओंकार गुलवाडी (मुंबई), पं. विश्वनाथ शिरोडकर (मुंबई), पं. अरविंदकुमार आज़ाद (पुणे), डॉ. प्रो. गौरांग भावसार (बड़ोदरा), प्रो. चंद्रशेखर पेंडसे (बड़ोदरा), डॉ. केदार मुकादम (बड़ोदरा), श्री. नंदकिशोरजी दाते (बड़ोदरा), संगीताचार्य डॉ. आनंद नायगांवकर (मुंबई), पं. सदानंद नायमपल्ली (मुंबई), डॉ. रेणू जोहरी (इलाहाबाद), पं. महेश पाटील (इचलकरंजी), श्री. स्वप्निल भिसे (मुंबई), श्री. सिध्देश कामत (मुंबई), पं. सुशीलकुमार जैन (चंदीगढ़), प्रो. अजयकुमारजी (दिल्ली), प्रो. निलु शर्मा (आग्रा), पं. किरण देशपांडे (भोपाल), पं. प्रविण उध्दव (बनारस), डॉ. शिवेंद्रप्रताप त्रिपाठी (आग्रा), पं. उमेश मोघे (पुणे), श्रीमती श्रुति सड़ोलीकर–काटकर (लखनौ), पं. राजेंद्र कुलकर्णी (पुणे), पं. अरूण जोशी, डॉ. नंदकुमार जोशी, प्रा. निखिल भगत (सभी कोल्हापूरसे), इत्यादि इन सभी सन्माननीय व्यक्तिविशेषोंको प्रेमपूर्वक धन्यवाद देना चाहूँगा। इसके साथ ही, शोधप्रबंध हेतु जिन–जिन ग्रंथो का मैंने सहारा लिया तथा संदर्भ लिया उन सभी विद्वान विचारवंत एवं ग्रंथकारों का भी मैं प्रेमपूर्वक आभार मानता हूँ। इन विचारवंतों के साहित्य सौंदर्य ने मेरा शोधप्रबंध पूर्णतः संपन्न बना दिया। मेरे शोध प्रबंध के भाषा व्याकरण शुद्धि का अत्यंत अभ्यासपूर्वक कार्य प्रा. सागर कांबले (कोल्हापुर) सर जी ने किया। मैं उनका व्यक्तिशः आभारी हूँ।

परमपिता परमात्मा परमेश्वर के आशीर्वाद के बगैर तो कुछ भी संभव नहीं है। आज, संगीत कला में तबला विषय लेकर Ph.D. के रूप में यह जो मुझे सेवा करने का मौका मिल रहा है, यह केवल परमेश्वर की असीम कृपा, माँ भगवति एवं गुरूजनों के आशीर्वाद की ही फलश्रुति है। आज, मैं अपने आप को परमभागी समझता हूँ की, इस माध्यम से मुझे तबला कला की थोड़ी बहुत सेवा करने का मौका मिला और इसी तरह

संगीत कला की जीवनभर निरंतर सेवा मिले, यही मेरी परमेश्वर से करजोड़ प्रार्थना है। इस दौरान, Ph.D के इस पूरे कार्य काल में मैं मुल कोल्हापुर निवासी कब 'बड़ोदेकर' हो गया, यह मुझे भी मालूम नहीं हुआ। मैं हमेशा यहीं महसूस करता रहा की, मैं अपने गांव कोल्हापुर में ही हूँ। सभी बड़ोदा निवासी सज्जनों को मै मनस्वी वंदन करता हूँ। ज्ञात–अज्ञात जो भी किसी का नाम्मोल्लेख नहीं कर पाया, वह केवल मेरी भूल के कारण ही, इन सभी को ह्दयपूर्वक धन्यवाद देता हूँ। भगवान् की कृपा से ही मुझे यह सब संभव हो पाया है, ऐसी मेरी धारणा है और फिर एक बार मेरे मार्गदर्शक तबला गुरू प्रो. डॉ. अजयजी अष्टपुत्रे इनको वंदन करते हुए उन्हें ह्दयपूर्वक धन्यवाद देता हूँ, केवल उनकी बदौलत ही मेरा यह कार्य साकार रूप बन पाया है।

मेरे शोधकार्य– शोधप्रबंध के इस पूरे कार्यकाल में मुझे प्रो. डॉ. प्रभाकरजी दाभाडे (Dean, Faculty of Performing Arts, MSU, Boroda) और प्रो. डॉ. गौरांगजी भावसार (Head, Dept. of Tabla) इन दो व्यक्तिविशेषों का विशेष रूप से सहयोग और मार्गदर्शन मिला, मैं इनका भी मनःपूर्वक आभार मानता हूँ।

तबले के Ph.D. हेतु किया गया यह शोधकार्य–शोधप्रबंध मैं मेरे सभी पूजनीय सांगीतिक गुरूजनों, अध्यात्मिक गुरूजनों, मेरे वंदनीय माता–पिता और माँ भगवति सरस्वती देवी के पवित्र चरणों में सादर सविनय अर्पण करता हूँ।

हार्दिक धन्यवाद!

शोधार्थी

सचिन कचोटे